A–970

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MASL–204

M.A. Sanskrit (MASL)

(नाटक एवं नाटिका)

2nd Year Examination, 2024 (June)

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) (2×19=38)

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. नाट्य साहित्य के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।

2. मृच्छकटिकम् के द्वितीय अंक का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

3. मृच्छकटिकम् के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण लिखिए।

4. रत्नावली नाटिका के प्रथम एवं द्वितीय अंक की साहित्यिक विशेषता लिखिए।

5. निम्नलिखित श्लोक की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

पर्यंकग्रन्थिबन्धद्विगुणिभुजगाश्लेषसम्वीतजनो-

रन्तः प्राणावरोधव्युपरतसकलज्ञानरुद्धेन्द्रियस्य।

आत्मन्यात्मानमेव व्यपगतकरणं पश्यतस्तत्वदृष्ट्या

शम्भोर्वः पातु शून्येक्षणघटिलयब्रह्मलग्नः समाधिः॥

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) (4×8=32)

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. शूद्रक की काव्यकला एवं नाट्यकला पर प्रकाश डालिए।

2. चरुदत्त का चरित्र-चित्रण लिखिए।

3. निम्नलिखित श्लोक की व्याख्या कीजिए–

सत्यं न में विभवनाशकृतास्ति चिन्ताः

भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति।

एत्ततु मां दहति नष्टधनाश्रयस्य

यत्सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति॥

4. मृच्छकटिकम् के आधार पर विदूषक का चरित्र-चित्रण लिखिए।

5. भयाकुल वसन्तसेना का वर्णन कीजिए।

6. मृच्छकटिकम् के प्रतिनायक का चरित्र-चित्रण लिखिए।

7. जुए में हारे हुए व्यक्ति की क्या दशा होती है ? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

8. निम्नलिखित श्लोक की व्याख्या कीजिए–

उत्कण्ठितस्य हृदयानुगुणा वयस्या
संकेतके चिरयति प्रवरों विनोदः।
संस्थापना प्रियतमा विरहातुराणा।
रक्तस्य रागपरिवृद्धिकरः प्रमोदः॥

****